International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 6, June 2019
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com, editor@aarf.asia

मिथिला की पावन भूमि को समृद्ध करती मैथिली भाषा

डॉ0 पल्लवी
फ्लैट नं0-10,
पार्क व्यू अपार्टमेन्ट,
लूकरगंज, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश-211003,

'मैथिली बिहार के मिथिला प्रान्त की एक अत्यन्त प्रसिद्ध बोली है। मिथिला का उल्लेख वेद , उपनिषद, ब्राह्म साहित्य, अरण्यक, महाभारत, रामायण, पुराणों आदि अनेक पौराणिक ग्रंथों में मिलता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राजा जनक के पूर्वज राजा मिथि ने मिथिला नगरी की स्थापना की थी।[1] श्रीमद्भागवत महापुराण में भी राजा मिथि के द्वारा मिथिला के बसायें जाने का उल्लेख मिलता है।[2] महाभारत में इस प्रान्त को मिथिला तथा इसके शासकों को 'विदेहवंशीय' (विदेहाः) कहकर संबोधित किया गया है।[3] जबकि 'वृहद विष्णु पुराण' में मिथिला के बारह नामों का वर्णन मिलता है-

मिथिला तैरभूक्तिपश्च वैदेही नैमिकाननम्।
ज्ञानशीलम् कृपापीठम् स्वर्ण लांगल-पद्धतिः।।
जानकी जन्मभूमिश्च निरपेक्षा विकल्पमषा।
रामानन्दकारी विश्वभारती नित्यमंगला।।
इति द्वादश नामनि मिथिलाया...।[4]

उपर्युक्त नामों में तीरभूक्ति (तिरहुत) विदेह और मिथिला विशेष प्रचलित है। आधुनिक मत के अनुसार- 'मिथ का अर्थ है- 'एकसाथ' या 'मिला हुआ'। यह प्रदेश प्राचीन छोटे-छोटे राज्यों (वैशाली , विदेह

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

तथा अंग) का मिला रूप है। अतः इसे मिथिला कहा जाता है। [5] वृहद् विष्णु पुराण में मिथिला की चौहदी (सीमा) का उल्लेख मिलता है-

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमाधिगम्यवै ।

योजनानि चतुर्विश व्यायामः परिकीर्तितः ।।

गंऽग प्रवाहमारम्य यावद्धैमवतम्बनम् ।

विस्तारः षाऽश्प्रोक्तो देशस्य कलनन्दन ।।[6]

अर्थात, मिथिला की सीमा पूर्व में कोसी से आरम्भ होकर पश्चिम में गंडक तक 24 योजन तथा दक्षिण में गंगा नदी से शुरू होकर उत्तर में हिमालय वन तक 16 योजन तक फैली है। 'मैथिली' मिथिला प्रान्त की मातृभाषा है। इसका क्षेत्र पूर्वी चम्पारण , मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया तथा उत्तरी संथाल परगना है। इसके अतिरिक्त यह मालदा , दिनाजपुर और नेपाल की तराई में भी बोली जाती है। किन्तु 'विशुद्ध मैथिली दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, उत्तरी मुंगेर तथा उत्तरी भागलपुर में बोली जाती है।[7]

भाषा के अर्थ में 'इसका प्रथम उल्लेख 1771 में 'तिरुतियन' रूप में (बेलिगत्ती लिखित 'अब्फाबेटुम ब्राह्मनिकुम' की अम्दुजी की भूमिका में) मिलता है। 'मैथिली' नाम का प्रयोग आधुनिक काल का है। सर्वप्रथम 1801 में कोलब्रुक ने इस नाम का उल्लेख अपने लेखों में किया है।[8] विद्यापति ने मैथिली भाषा के लिए 'देसिल बयना' शब्द का प्रयोग किया है-

देसिल बयना सब जन मिट्ठा

तै तैसन जम्पओ अवहट्ठा।[9]

'मैथिली' की उत्पत्ति मागधी अपभ्रंश के मध्य या केन्द्रीय रूप से मानी जाती है। मैथिली के लिए तीन लिपियों का प्रयोग होता है। मैथिल ब्राह्मणों में मैथिली लिपि प्रचलित है , जो बँगला से बहुत मिलती-जुलती है। अन्य जातियों के लोग स्थानीय रूपान्तरों के साथ कैथी लिपि का प्रयोग करते हैं। साहित्यिक कार्यों के लिए नागरी का प्रयोग होता है। [10] भाषा के रूप में 'मैथिली' को पहली सफलता तब मिली जब सन् 1919 ई0 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए इसे मान्यता प्रदान की। इसके बाद काशी विश्वविद्यालय और बाद में पटना विश्वविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रम में इसे शामिल किया। सन् 1965 ई0 में 'भारतीय साहित्य अकादमी' द्वारा मैथिली को साहित्यिक भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। लेकिन मैथिली भाषा को सर्वाधिक सफलता तब मिली जब 92वाँ संविधान संशोधन 2003 द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में इसे

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

शामिल किया गया। नेपाल के अन्तरिम संविधान ने 2007 में इसे एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया है जबकि भारत के झारखण्ड राज्य ने 2018 ई0 में इसे अपनी द्वितीय राजभाषा का दर्जा दिया है।

'लिग्विंस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (1927) के प्रणेता जार्ज ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के अनुसार उस समय भारत में मैथिली बोलने वालों की संख्या एक करोड़ से ऊपर थी लेकिन आधुनिक आँकड़ों के आधार पर भारत में लगभग 1.12 प्रतिशत आबादी मैथिली बोली का प्रयोग करती है। मैथिली बोली के संदर्भ में निम्न विवरण प्रस्तुत है-

भारत सरकार की जनगणना 2011-के अनुसार मैथिली भाषा का विवरण :

वर्ष	मैथिली बोलने वालों की जनसंख्या	मैथिली बोलने वालों का अनुपात प्रतिशत में
1971	61,30,026	1.12
1981	75,22,265	1.13
1991	77,66,921	0.93
2001	1,21,79,122	1.18
2011	1,35,83,965	1.12

जनगणना 2011-के अनुसार मैथिली भाषा भारत में वीं सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हैं13|

भारत सरकार की जनगणना 2011-के अनुसार बिहार में मैथिली भाषा बोलने वालों का विवरण :

क्षेत्र	पुरुष	महिला	कुल जनसंख्या
शहरी क्षेत्र	353358	313700	667058
ग्रामीण क्षेत्र	6463469	5932515	12395984
कुल	**6816827**	**6246215**	**13063042**

जनगणना 2011-के अनुसार भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मैथिली भाषा का विवरण :

राज्य केंद्र शासित प्रदेश /	**पुरुष**	**महिला**	**कुल जनसंख्या**
जम्मूकश्मीर-	588	309	897
हिमाचल प्रदेश	3132	1591	4723
पंजाब	5569	3485	9054
चंडीगढ़	2119	1045	3164
उत्तराखंड	27969	26584	54553
हरियाणा	15099	10586	25685
दिल्ली एनसीआर	70696	52260	122956
राजस्थान	6758	4908	11666
उत्तर प्रदेश	13435	11396	24831
बिहार	6816827	6246215	13063042
सिक्किम	360	236	596
अरुणाचल प्रदेश	1773	1190	2963
नागालैंड	1001	472	1473
मणिपुर	159	54	213
मिज़ोरम	83	28	111
त्रिपुरा	184	110	294
मेघालय	572	309	881
असम	3688	2346	6034
पश्चिम बंगाल	16766	12975	29741
झारखंड	73582	64585	138167
ओड़ीशा	1354	1084	2438
छतीसगढ़	5015	4079	9094
मध्य प्रदेश	2243	1886	4129
गुजरात	7065	3799	10864
दमन और द्वीप	745	299	1044
दादर और नागर हवेली	1376	811	2187
महाराष्ट्र	30582	16414	46996
आंध्रा प्रदेश	1532	1295	2827
कर्नाटक	1118	692	1810
गोवा	178	111	289
लक्षद्वीप	------	------	------
केरल	141	73	214
तमिलनाडु	260	120	380
पुडुचेरी	10	4	14
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	77	57	134
कुल जनसंख्या	**7112056**	**6471408**	**13583464**

अतः उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि मैथिली बोली के प्रयोगकर्ता केवल बिहार में ही नहीं बल्कि पूरे देश में फैले हुए हैं।

‘मैथिली’ भाषा के विविध रूप है। ‘उत्तरी मैथिली’, ‘दक्षिणी मैथिली’, ‘पूर्वी मैथिली’, ‘पश्चिमी मैथिली’, ‘छिका-छिकी’ तथा ‘जोलहा बोली’ मैथिली की ये छः उपबोलियाँ हैं। कुछ लोग पूर्वी सीतापुर तथा मधुबनी सब-डिवीजन की निम्न श्रेणी की जातियों की बोली को ‘केन्द्रीय’ (जन साधारण की) मैथिली का नाम देते हैं। इस प्रकार इसकी बोलियों की संख्या सात हो जाती हैं। इनमें उत्तरी मैथिली ही ‘मैथिली’ का परिनिष्ठित रूप है, जो उत्तरी दरभंगा तथा आस-पास के ब्राह्मणों में विशेष रूप से प्रयुक्त होती है।[11]

व्याकरणिक दृष्टिकोण से मैथिली भाषा की अपनी कुछ खास विशेषताएँ हैं , जिसके कारण वह अपन स्वतंत्र और पृथक अस्तित्व रखती है। मैथिली बोली की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है-

1. मैथिली बोली में कुछ **ध्वनियाँ** परिवर्तित हो जाती है-

   ल् > न् = लवन > नून, अलवण > अनोन ।

   न् > ल् = नोट > लोट, नंबर > लंबर ।

2. मैथिली बोली में **महाप्राणीकरण** की प्रवृत्ति अधिक देखने को मिलती है -

   वेष > बेख, जर्जर > झांझर ।

3. मैथिली बोली में **घोषीकरण** और **अघोषीकरण** दोनों का प्रयोग होता है-

   घोषीकरण - एकादश > एगारह, डॉक्टर > डाकडर ।

   अघोषीकरण - मेज़ > मेच, कमीज़ > कमीच ।

4. इस बोली में **संज्ञा** के तीन रूप देखने को मिलते है -

   सामान्य - घर, घोड़ा

   दीर्घ - घरवा, घोड़वा

   दीर्घतर - घरउआ, घोउड़वा।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

5. मैथिली बोली में **सर्वनामों** का प्रयोग निम्न प्रकार से होते है-

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	हाम, हँओ, हम्मे,	हमनी, हम सभ,
	मोरें, मोय, हमरा	हमनी के
मध्यम पुरुष	तोंह, तुहु, तुहुँ	तोहनी, तोंह सम, तोहनी के
	तोरा, तोहरा	
अन्य पुरुष	ओहि, उहे, ओकरा, ओई	उन्ह, हुनि, हुनकर, हुनका

6. इस बोली में **पुलिंग से स्त्रीलिंग** बनाने के लिए निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है-

ई - नेनी (लड़की)

इया - नेनिया

ईवा - घोड़ीवा

आइन - पंडिताइन

7. चल, चलै, चलिहे, चलिअह, चलू, चली आदि मैथिली बोली की कुछ विशेष **क्रियाएँ** है।

8. छिअहु, थिकहु, थिकिऔ, थिकिऐ, छथून्हि, छलिअहु, छलिऐन्हि आदि **सहायक क्रियाओं** का प्रयोग मैथिली बोली में किया जाता है।

साहित्यिक दृष्टि से मैथिली भाषा का अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। बिहारी भाषाओं में सबसे अधिक साहित्य मैथिली में ही लिखा गया है। इसमें गद्य , पद्य, नाटक आदि अनेक विधाओं के साहित्य प्रचूर मात्रा में विद्यमान है। सर्वप्रथम ज्योतिरीश्वर ठाकुर की रचनाओं पर विचार कर लेना समीचीन होगा। ज्योतिरीश्वर ठाकुर संस्कृत के साथ-साथ मैथिली भाषा के भी प्रकाण्ड विद्वान थे। उनके द्वारा रचित 'वर्णरत्नाकर' मैथिली भाषा की प्रसिद्ध गद्यकाव्य है। इस ग्रंथ के संबंध में हर प्रसाद शास्त्री लिखते हैं- ''इस

आलोच्यकाल में जो अंतिम मैथिली हस्तलेख प्राप्त हुआ है , वह ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्य कृत 'वर्णरत्नाकर'। हस्तलेख परम विपन्न अवस्था में है लेकिन जितना भाग अभी तक पढ़ा है , वह स्पष्ट और सुन्दर अवस्था में है। लिपि प्राचीन तिरहुता है , जिसे प्राचीन बांग्ला से अलग करना कठिन है। भाषा मैथिली है, लेकिन इसे बांग्ला से अच्छी तरह अलग नहीं किया जा सकता। [12] इनकी दूसरी कृति 'धूर्तसमागम' एक प्रहसन है। वर्णरत्नाकर की तरह यह नाटक भी चौदहवीं शती के मिथिला के सामाजिक इतिहास की दृष्टि से भी विशेष महत्व का है। इसमें तत्कालीन मिथिला की विविध जाति , भोज्य-वस्तु, आचार तथा नियम-कानून संबंधी बहुत सारी बातें प्रकट होती है।[13]

ज्योतिरीश्वर ठाकुर के बाद मैथिली भाषा की गौरवशाली परम्परा को स्थापित करने में महाकवि विद्यापति का योगदान अविस्मरणीय है। "जिस समय संस्कृत समस्त आर्यावर्त की सांस्कृतिक भाषा के तौर पर स्वीकृत थी, उस समय उन्होंने अपनी क्षेत्रीय बोली को अपने मधुर और मोहक काव्य का माध्यम बनाया एवं साहित्यिक भाषा के अनुरूप उसमें अभिव्यक्तिकरण का सामर्थ्य भर दिया। उन्होंने दूसरों के द्वारा अनुकरणीय एक नये प्रकार के काव्य की परम्परा चलाई और आर्यावर्त के इस हिस्से में ऐसा कोई साहित्य नहीं है, जो उनकी प्रतिभा एवं रचना-कौशल के प्रभाव के प्रति अत्यधिक ऋणी नहीं है। उन्हें मैथिल-कोकिल ठीक ही कहा गया है, क्योंकि उनके मधुर कूजन ने आधुनिक पूर्वात्तर भारतीय भाषाओं के काव्य में यथार्थतः वसंत का आगमन करवाया "[14] विद्यापति की प्रसिद्धि का आधार उनके द्वारा रचित गीत है। उनके गीतों की अद्भुत भावुकता एवं माधुर्य भाषा शैली से मिथिला की पावन भूमि सदा आप्लावित रही है। उनके गीतों के भाव वैशिष्ट्य से प्रभावित होकर ही महाराजा शिवसिंह ने उन्हें 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित किया। विद्यापति द्वारा रचित लोकगीत न केवल मिथिलांचल में बल्कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त है।

मैथिली साहित्य की परम्परा को समृद्ध करने में उमापति उपाध्याय , लोचन, हर्षनाथ, गोविन्ददास आदि का योगदान स्मरणीय है। इस भाषा में अनेक महाका व्य भी लिखे गये, जिनमें मनबोध का 'कृष्णजन्म', चन्दा झा का 'रामायण', लालदास का 'रमेश्वर चरित रामायण ', तंत्रनाथ झा का कीचक वद्य प्रसिद्ध है। जहाँ तक आधुनिक भावबोध एवं शिल्प का प्रश्न है तो इसकी शुरूआत नागार्जुन (बै द्यनाथ मिश्र 'यात्री') से मानी जाती है। उन्होंने समसामयिक समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से मुखरित किया। उनकी परम्परा को

आधार बनाकर लिखने वाले प्रसिद्ध कवि हैं- राजकमल चौधरी , हंसराज, रामलोचन ठाकुर, कुलानंद मिश्र, उदयचंद्र झा, केदार कानन आदि। मैथिली भाषा में नाटक को 'कीर्तनिया' नाटक कहा जाता है। विद्यापति का 'गोरक्षविजय', रामदास का 'आनंद विजय ', हर्षनाथ का 'उषाहरण एवं 'माधवानंद', उमापति का परिजातहरण, लाल कवि का 'गौरी स्वयंवर आदि अत्यन्त लोकप्रिय नाटक है। मैथिली कथा साहित्य की शुरूआत बीसवीं शताब्दी में हुई। इनमें हरिमोहन झा का 'कन्यादान', नागार्जुन का 'पारो', अवधनारायण झा का 'वनमानुष', राजकमल चौधरी का 'आदिकथा', शैलेन्द्र मोहन का 'मधुश्रावणी', ललित कृत 'पृथ्वीपुत्र', उपेन्द्रनाथ झा व्यास का 'दू पत्र' आदि प्रमुख उपन्यास है। इसके अलावा , इस भाषा में आलोचना , कहानी, निबन्ध, रिपोर्ताज, जीवनी आदि विविध विधाओं में लेखन कार्य निरन्तर हो रहे हैं।

लोकगीतों की चर्चा के बिना मिथिला का अस्तित्व अधूरा है। यहाँ के लोकगीतों में समाज और लोक मानस के सम्पूर्ण वैशिष्ट को जीवंत रूप में अनुभव किया जा सकता है। यह उन वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है , जो परम्पराओं और मान्यताओं के प्रति आस्थावान होते हैं। यह मूलतः लोक की मौखिक अभिव्यक्ति होती है , जो सम्पूर्ण मानव जीवन का नेतृत्व करती है। इसमें बच्चे के गर्भ में स्थान प्राप्त करने से लेकर जन्म , नामकरण, मुण्डन, उपनयन, विवाह, पूजा-पाठ, लोक उत्सव, आदि सभी अवसरों पर गाये जाते हैं। जीवन संस्करण के लिए सोहर , सम्मरि, लग्नगीत, योग आदि, धार्मिक संस्कारों के लिए छठ के गीत , भगवती के गीत, शीतला माता के गीत , नदी के गीत आदि ऋतुओं के लिए फाग , चैतावर, मधुसाँवनी, बरसाइत, बारहमासा आदि तथा ना च के लिए झूमर , जट्ट-जट्टिन, रास, श्याम-चकेबा आदि अत्यन्त प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय लोकगीत है जो मिथिला के साथ-साथ पूरे देश में गाये और सुने जाते हैं। कुछ प्रसिद्ध लोक गीत यहाँ प्रस्तुत है-

छठ के गीत –

हमरों पर होइओ सहाय हे छठि मइया,
हमरों पर होइयो सहाय............

नचारी -

बाबा बैद्यनाथ हम आयल छी भिखरिया
अहाँ के दुअरिया ना...........

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

विवाह गीत-

आजु शुभ दिन मंगल, मंगल गाउ हे

जानकी होयत विवाह जनकपुर आउ हे............

इन लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मिथिला की सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी है। इसके स्रोत भले ही पौराणिक संदर्भ है, लेकिन इसका प्राण लोक जीवन में निहित है।

मैथिली भाषा के उत्थान में समाचार पत्रों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैथिली भाषा की पहली पत्रिका 'मैथिली हित साधन' सन् 1905 ई0 में प्रकाशित हुई। यह एक मासिक पत्रिका थी इसके बाद सन् 1906 में 'मिथिला गोद' और सन् 1908 में 'मिथिला मिहिर' का प्रकाशन हुआ। इसके अलावा 'मिथिला प्रभा', 'मैथिल प्रभाकर', 'मिथिला मित्र', 'मैथिली बन्धु', 'मिथिला-ज्योति', आदि पत्र-पत्रिकाओं की भी उल्लेखनीय भूमिका रही हैं।

अन्त में, निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतवर्ष की उन्नति के लिए राजभाषा हिन्दी के साथ-साथ प्रान्तीय भाषाओं का यथोचित विकास भी अनिवार्य है, क्योंकि प्रान्तिय संस्कृति को जाने बिना समस्त भारतीय संस्कृति का ज्ञान अधूरा है। मिथिला की मातृभाषा मैथिली की अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा है, जो सम्पूर्ण देश के विकास में प्रचूर योगदान करती रही है। मैथिली भाषा अपनी समृद्धशीलता और माधुर्यता के कारण केवल मिथिलांचल विशेष की नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश की लोकप्रिय भाषा बन गयी है।

<u>संदर्भ सूची</u>

1. वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण-1995, पृ0 739
2. श्रीमद्भागवत महापुराण (सटीक), गीता प्रेस गोरखपुर, संस्करण-2001, पृ0 54
3. महाभारत (सटीक), गीता प्रेस गोरखपुर, संस्करण-1996, पृ0 339
4. वृहद् विष्णु पुराणीय मिथिला महात्म्यम् (सटीक), संपादन अनुवाद पं0 श्री धर्मनाथ शर्मा, संस्करण 1980, पृ0 8
5. हिन्दी भाषा, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, सं0 1999, पृ0 74
6. वृहद् विष्णु पुराणीय मिथिला महात्म्यम् (सटीक), पूर्ववत्, पृ0- 8
7. हिन्दी भाषा, डॉ0 हरदेव बाहरी, संस्करण-2009, पृ0- 203
8. हिन्दी भाषा, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पूर्ववत्, पृ0-75

9. कीर्तिलता, विद्यापति

10. हिन्दी भाषा, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पूर्ववत्, पृ0-75

11. उपर्युक्त, पृ0- 75

12. मैथिली साहित्यिक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ0 दिनेश कुमार झा, संस्करण-1991, पृ0-62-63

13. उपर्युक्त, पृ0- 71

14. भारतीय साहित्य के निर्माता विद्यापति, रमानाथ झा, संस्करण-2017, पृ0-7

-------------------o--------------------

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.